Q. वैशेषिक के सामान्य की विवेचना एवं पदार्थ के रूप में करें।

वैशेषिक दर्शन में 'पदार्थ' का चिन्तन को मुख्य विषय बनाया गया है और इसके स्वरूप तथा संख्या की विशद विवेचना की गयी है फलस्वरूप इसे पदार्थशास्त्र भी कहा जाता है। यद्यपि यह सात पदार्थों को स्वीकार करता है किन्तु इनमें सामान्य तथा विशेष ऐसे दो स्तम्भ हैं जिनपर सम्पूर्ण वैशेषिक दर्शन आधारित है।

स्पष्ट है कि सामान्य वैशेषिक दर्शन का एक महत्वपूर्ण पदार्थ है। इस जगत में अनेक वस्तुएं हैं। प्रत्येक वस्तु में अपनी कुछ विशेषता होती है जिसके कारण व्यक्तिगत रूप से एक वस्तु दूसरी वस्तु से भिन्न होती है। किन्तु इन वैयक्तिक भिन्नताओं के रहते हुए भी वस्तुओं में समानता या पारस्परिक अभिन्नता भी दृष्टिगोचर होती है जिसके कारण बहुत से व्यक्तियों को एक वर्ग में रखते हैं तथा एक नाम से पुकारते हैं। उदाहरणार्थ व्यक्ति विशेष मनुष्य - राम श्याम आदि यद्यपि लम्बा नाटा, गोरा काला होने के कारण परस्पर भिन्न हैं किन्तु इन भिन्नताओं के बावजूद भी सभी को मनुष्य कहते हैं। अतः जिस समान गुण या लक्षण के कारण उनमें पारस्परिक अभिन्नता है वही सामान्य है। ~~सबों में जो पारस्परिक अभिन्नता है वही सामान्य है~~। सबों में जो पारस्परिक अभिन्नता का बोध होता है उसे ही 'अनुवृत्ति प्रत्यय' कहा जाता है और जिसके आधार पर यह अनुवृत्ति प्रत्यय होता है वही सामान्य है। अतः व्यक्ति विशेष मनुष्यों में मनुष्यत्व, व्यक्ति विशेष गायों में गायत्व, व्यक्ति विशेष अश्वों (घोड़ों) में अश्वत्व आदि सामान्य है। इसे प्रकार सामान्य जाति को कहते हैं।

सामान्य का विचार पाश्चात्य दर्शन के Universal की अवधारणा के समकक्ष है किन्तु यह विचार Genus की अवधारणा से भिन्न है। सामान्य

Scanned by CamScanner

की तरह Universal भी व्यक्तिविशेषों के साथ जाति या लक्षण का द्योतक है। Genus वर्ग का द्योतक है जिसके अन्तर्गत अनेक उपवर्ग (Species) भी आते हैं जैसे द्रव्य वर्ग के अन्तर्गत घट, पट कपालादि का समावेश है लेकिन द्रव्य का सामान्य द्रव्यत्व है, घट का सामान्य घटत्व है, पट का सामान्य पटत्व है आदि। इस प्रकार सामान्य वर्ग का नाम न होकर जाति लक्षण का द्योतक है जिसमें उपवर्गों के समावेश की कोई बात नहीं उठती। Dr. C.D. Sharma ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा है कि "The samanya is more like the 'universal' than like the 'genus'. The genus stands for the class and includes the sub classes as species. The samanya stands not for the class, but for the common characteristic of certain individuals and does not include the sub-classes."

सामान्य लक्षण का द्योतक है फलस्वरूप इसे गुण समझ लेने की भूल हो सकती है किन्तु यह गुण नहीं है क्योंकि गुण द्रव्याश्रित होता है परन्तु सामान्य स्वतन्त्र है। पुनः यह केवल द्रव्यों में ही नहीं रहता है बल्कि गुण में भी रहता है जैसे लालों का सामान्य लालित्व है। अतः यह गुण से पृथक है।

न्याय-वैशेषिक के अनुसार सामान्य, नित्य, एक तथा अनेक व्यक्तियों में समवेत है — "नित्यमेकमनेकानुगतं सामान्यम्।" इसमें सामान्य की प्रमुख तीन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है।

नित्यम् — सामान्य नित्य है, व्यक्तियों का जन्म तथा नाश होता है किन्तु सामान्य की सत्ता व्यक्तियों से पृथक तथा स्वतन्त्र है फलस्वरूप व्यक्तियों के नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता है, अतः यह नित्य है।

यहाँ यह स्पष्ट है कि सामान्य नित्य होने के कारण दिक्-काल से परे है।

Scanned by CamScanner

सामान्य के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि इसका सत्ताभाव होता है किन्तु यह नहीं कहा जा सकता है कि इसका अस्तित्व होता है। पाश्चात्य दर्शन की शब्दावली में सामान्य Subsist करता है, Exist नहीं करता है।

एकम् — सामान्य एक है। सामान्य ही व्यक्तिविशेषों का आवश्यक लक्षण है जिसके आधार पर पारस्परिक अभिन्नता या सबों में अनुगत प्रत्यय की संभावना बनती है। अतः एक कोटि के सभी व्यक्तियों में एक ही सामान्य होता है। जैसे रामश्याम आदि व्यक्ति विशेष वस्तुओं में एक ही सामान्य मनुष्यत्व होता है।

अनेकानुगतम् — सामान्य एक होते हुए भी अनेक व्यक्तियों में समवेत रहता है। वैशेषिक दर्शन में सामान्य तथा व्यक्तियों के बीच समवाय संबंध को स्वीकार किया गया है इसलिए इसे 'अनेक समवेतत्व' भी कहा जाता है। अतः एक ही सामान्य भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में समाहित है जैसे मनुष्यत्व संसार के सभी मनुष्यों में समवेत है।

प्रागादि अभाव के सभी भेदों का एक अभावत्व धर्म है किन्तु अभाव तथा अभावत्व के बीच समवाय संबंध नहीं है। अभावत्व जाति या सामान्य नहीं है बल्कि उपाधि है। पुनः सामान्य भाव पदार्थ है किन्तु अभाव नकारात्मक या भाव पदार्थ के विपरीत है। अतः सामान्य अभाव से भिन्न है।

समवाय संबंध से एक व्यक्ति में रहनेवाला धर्म भी सामान्य नहीं है। उदाहरणार्थ आकाश, दिक् तथा काल एक-एक है, अतः इनमें रहनेवाला धर्म आकाशत्व, दिकत्व और कालत्व उपाधियाँ हैं, सामान्य नहीं।

कणाद ने सामान्य तथा विशेष को बुद्ध्यपेक्ष (relative to thought) कहा है किन्तु इससे यह नहीं समझा जाना चाहिए कि ये विषयीगत प्रत्यय (Subjective concept) मात्र हैं बल्कि ये तो वास्तविक वस्तुगत (objective) पदार्थ हैं क्योंकि वैशेषिक

दर्शन वस्तुवादी (realistic) है। Dr. C. D. Sharma इसलिये यह स्पष्ट रूप से कहते हैं "Kanada calls generality and relative to thought (buddhyapeksa). But this does not mean that the universal and the particular are mere subjective concepts in our minds. Both are objective realities. The system is staunchly realistic ......"

वास्तव में सामान्य तथा विशेष मूर्त (concrete) न होकर अमूर्त (abstract) हैं और इसी कारण स्वभावतः उन्हें बुद्ध्यपेक्ष कहा गया है।

सामान्य तथा प्लेटो का प्रत्यय

वैशेषिक के सामान्य के विचार का साम्य पाश्चात्य दार्शनिक प्लेटो के प्रत्यय (Idea) से है किन्तु दोनों में पूर्ण साम्य नहीं है क्योंकि प्लेटो ने व्यक्ति विशेषों को प्रत्यय की प्रतिलिपि माना है किन्तु वैशेषिक दर्शन में व्यक्ति विशेषों को सामान्य की प्रतिलिपि नहीं माना गया है।

भारतीय दर्शन में सामान्य के अन्य विचार

भारतीय दर्शन में न्याय-वैशेषिक के वस्तुवादी मत के अतिरिक्त सामान्य के संबंध में दो मुख्य मत नामवाद (Nominalism) तथा प्रत्ययवाद (Conceptualism) भी प्रतिपादित हुए हैं।

नामवाद (Nominalism) - बौद्ध दार्शनिकों के अनुसार सामान्य की कोई यथार्थ सत्ता नहीं है बल्कि यह एक नाम है। व्यक्ति का स्वलक्षण लक्षण ही सत्य है तथा सामान्य लक्षण मात्र कल्पना है। बहुत से व्यक्तियों को एक नाम दे देते हैं जिससे कि अन्य नामवाले व्यक्तियों से उन्हें हम भिन्न करने में समर्थ हो सकें। उदाहरणार्थ बहुत से व्यक्तियों को हम गाय नाम दे देते हैं जिससे कि घोड़ा, हाथी आदि से उसे भिन्न हम कर सकें। किन्तु नाम के अतिरिक्त गोत्व या अश्वत्व

की कोई अपनी सत्ता नहीं है।

वास्तव में बौद्ध दार्शनिकों का यह विचार है कि अनुवृत्ति प्रत्यय के लिये भावात्मक सामान्य की कल्पना ही अनावश्यक है क्योंकि यह कार्य तो अपोह – तद्भिन्नभिन्नत्व से हो सकता है फलस्वरूप गायों के संबंध में अनुवृत्ति प्रत्यय गायों से भिन्न वस्तुओं से भिन्न होने के आधार पर हो सकता है।

प्रत्ययवाद (Conceptualism) – जैन तथा अद्वैत वेदान्तियों के अनुसार सामान्य की सत्ता व्यक्ति विशेष से पृथक नहीं है बल्कि यह तो उनका सार तत्व है जो उन्हीं में निहित रहता है जिसे हमारी बुद्धि ग्रहण करती है।

सामान्य के प्रकार :

व्यापकता या विस्तार की ~~दृष्टि से~~ दृष्टि से सामान्य के तीन प्रकार हैं —
① पर ② अपर ③ परापर।

पर सामान्य सर्वाधिक व्यापक सामान्य है। यह सबसे बड़ा सामान्य है। उदाहरणार्थ सत्ता सबसे अधिक व्यापक सामान्य है। द्रव्य गुण तथा कर्म में समान रूप से सत्ता रहती है फलस्वरूप द्रव्य सत्, गुण: सत् और कर्म सत् का हमें अनुभव होता है।

अपर सामान्य सबसे कम व्यापक सामान्य है। यह सबसे छोटा सामान्य है। उदाहरणार्थ – घटत्व केवल घड़ों में ही सीमित है।

परापर सामान्य की व्यापकता मध्य या बीच की होती है। उदाहरणार्थ द्रव्यत्व की व्यापकता घटत्व तथा सत्ता के बीच की है। घटत्व की अपेक्षा द्रव्यत्व बड़ा है किन्तु सत्ता की अपेक्षा यह छोटा है।

समीक्षा — सामान्य की कटु आलोचना बौद्ध दार्शनिकों ने की है, इस संदर्भ में उनकी निम्न कारिका बहुत प्रसिद्ध है —

न याति न च तत्रासीत् न चास्ति न ~~चांशवत्~~ चांशवत्।
जहाति पूर्वं नाधारमहो व्यसनसन्तति:॥

(6)

इसके इस सामान्य के विरुद्ध उनका यह कहना है कि सामान्य या तो सर्वगत है या पिण्डगत। यदि यह सर्वगत है तो उसके अन्तराल के ही जायेंगी। यदि यह सर्वगत है तो सभी व्यक्ति उसी जाति की एक आनेवाली, क्योंकि गाय, घोड़ा आदि, जो हास्यास्पद है। यदि यह पिण्डगत है तो जाति के दो जायेंगे। पुनः यदि विशेष में सामान्य और फलस्वरूप व्यक्ति विशेष के नष्ट होने पर नये व्यक्ति के जन्म हुआ है तो नये व्यक्ति में सामान्य कहाँ से चला आता है? यदि उसमें का सामान्य इसी व्यक्ति से चलकर नये व्यक्ति में आता है तो यह मान्य नहीं हो सकता है क्योंकि यह अमूर्त है फलस्वरूप इसमें गति संभव नहीं है। किन्तु यदि नये व्यक्ति में उसकी उत्पत्ति होती है तो यह भी मान्य नहीं हो सकता है क्योंकि ~~होगी~~ होती इसका अर्थ होगा कि उसकी उत्पत्ति होती है, लेकिन सामान्य तो नित्य है। अतः सामान्य की कल्पना ही निरर्थक है।

शंकराचार्य ने भी सामान्य का खण्डन किया है। उनके अनुसार विशिष्ट गाय के अन्दर सामान्य गाय का प्रत्यक्ष नहीं होता है। विशिष्ट गायों के अन्दर 'सामान्य गाय' विद्यमान न होकर सामान्य विशेषताएँ होती हैं।

पुनः यदि सामान्य गाय को प्रत्येक विशिष्ट गायों में विद्यमान मान लिया जाय तो किसी विशिष्ट गाय की सींग या पूँछ से भी दूध की प्राप्ति संभव होती किन्तु ऐसा नहीं होता। अतः सामान्य की कल्पना मिथ्या है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि वैशेषिक दर्शन का सामान्य संबंधी विचार एक निरर्थक तथा मिथ्या कल्पना है। यह कल्पना यथार्थ में अतार्किक तथा असंगतपूर्ण है फलस्वरूप संतोषजनक नहीं है।

—x—